DSSSB PRT, TGT & PGT
Part(A+B)
SCHOLAR BATCH
हिन्दी
भक्ति काल
Part -2
LIVE
11-06-2024 09:00 AM

दादू दयाल (1544-1603) -

इन्होंने दादू पंथ का प्रवर्तन किया। वे एक धर्म सुधारक एवं समाज सुधारक के रूप में प्रसिद्ध रहस्यवादी कवि थे। इनके पंथ को परमब्रह्म सम्प्रदाय भी कहा जाता है। रज्जब, सुन्दरदास, प्रागदास, जनगोपाल, इनके प्रमुख शिष्य थे। उनकी रचनाओं का संकलन हरडेवाणी नाम से इनके शिष्यों-सन्तदास एवं जगन्नाथ दास ने प्रस्तुत किया है। परशुराम चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित दादू दयाल में भी उनकी प्रमाणिक रचनाएँ संकलित हैं।

'भाई रे ! ऐसा पंथ हमारा ।
है पख रहित पंथ गह पूरा अबरन एक अधारा ।।
घीव दूध से रमि रह्या व्यापक सब ही ठौर ।

मलूकदास :-

इनका समय (1574-1682) मुगल काल है। इनके लिखे ग्रन्थों के नाम हैं- ज्ञान बोध, रतनखान, भक्ति विवेक, सुखसागर, भक्त बच्छावली बारहखड़ी, स्फुट पद, राम अवतार लीला, ब्रजलीला तथा ध्रुवचरित तथा आलसियों का महामन्त्र इन्हीं के द्वारा रचित हुआ है।

अब तो अजपा जपु मन मेरे ।
सुर न असुर तहलुआ जाके मुनि गंधव हैं जाके घेरे।
अजगर करे न चाकरी पंछी करै न काम।
दास मलूका कह गए सबके दाता राम।

सुन्दरदास (1596-1689)

ये दादू दयाल के शिष्य थे और प्रतिभाशाली कवि थे। इनके लिखे ग्रन्थों में ज्ञान समुद्र और सुन्दर विलास प्रसिद्ध हैं। इनकी रचनाओं का संकलन सुन्दर ग्रन्थावली (दो भाग) में पुरोहित 'हरी नारायण शर्मा' ने किया है। 'सुन्दरदास शृंगार रस के परम विरोधी थे । केशव की रसिक प्रिया और नन्ददास की रसमंजरी की निन्दा उन्होंने अपने एक छन्द में की है। इनकी रचनाएँ ब्रजभाषा में हैं।

रसिक प्रिया रस मंजरी और सिंगारहि जानि ।
चतुराई कारे बहुत विधि-विषै बनाई आनि ।।
ब्रह्म तें पुरुष अरु प्रकृति प्रकट भई ।
प्रकृति ते महत्त्व, पुनि अहंकार है ।

नोट : उक्त प्रमुख कवियों के अतिरिक्त 'लाल पन्थ' के प्रवर्तक (लाल दास) (1540-1648 ई.) बाबालाली सम्प्रदाय के प्रवर्तक बाबा लाल (1590-1655 ई.), सन्त रज्जब (1567 1689 ई.), बाबरी पन्थ की बाबरी साहिबा (1542-1605 ई.) सन्त सदना, सन्त पीपा, सन्त सेन, सन्त धन्ना (1415 ई.) भी सन्त कवियों में गिने जाते हैं। पंजाब में कुछ सिक्ख गुरुओं ने भी सन्त काव्य की रचना की है। इनमें प्रमुख हैं- गुरु अंगद, गुरु अमरदास, गुरु रामदास एवं गुरु अर्जुन देव ।

गुरु अंगद ने नानक की रचनाओं का संकलन किया और ब्रजभाषा मिश्रित पंजाबी में सरस गेय पदों की रचना की। गुरु अर्जुन देव (1563-1606) ई. एक अच्छे कवि थे। गुरु ग्रन्थ साहिब में उनके 6000 पद संकलित हैं। उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं-

1. सुखमनी
2. बावन अखरी
3. बारह मासा ।

शेख फरीद

(1472-1552) भी पंजाब के सन्त कवियों में उल्लेखनीय हैं। आदि ग्रन्थ में इनके चार पद संकलित हैं। सन्त 'वीरमान' की उपदेशपरक रचनाएँ 'बानी' शीर्षक से संकलित की गई हैं। अक्षर अनन्य ने योग और वेदान्त पर कई ग्रन्थ लिखे तथा 'दुर्गासप्तशती' का अनुवाद हिन्दी पदों में किया।

सगुण भक्ति धारा के अन्तर्गत दो प्रकार के काव्य का निर्माण हुआ है— राम एवं कृष्ण काव्य। वे कवि जिन्होंने 'राम' को अपना आराध्य मानकर काव्य की रचना की प्रथम वर्ग के कवि हैं। राम को विष्णु का अवतार एवं अयोध्या नरेश दशरथ के पुत्र के रूप में जाना जाता है। अतः राम भक्ति के रूप में वैष्णव भक्ति का पुनराख्यान ही मध्यकालीन रामकाव्य में लिखा गया है। वैष्णव भक्ति का प्रचार-प्रसार करने का श्रेय रामानुजाचार्य, रामानन्द, निम्बकाचार्य, माध्वाचार्य एवं श्री विष्णु स्वामी जैसे आचार्यों को जाता है। वैष्णव भक्ति के माध्यम से राम और कृष्ण की विष्णु के अवतारों के रूप में उपासना का सर्वत्र प्रचार हुआ और कवियों ने भी इनके जीवन चरित्र को आधार बनाकर रचनाएँ प्रस्तुत कीं।

राम काव्य धारा

राम को विष्णु का अवतार एवं अयोध्या नरेश दशरथ 'पुत्र' के रूप में जाना जाता है। अतः राम भक्ति के रूप में वैष्णव भक्ति का पुनराख्यान ही मध्यकालीन राम काव्य में किया गया है।

राम काव्य का विकास

राम काव्य के आधार ग्रन्थ के रूप में संस्कृत की वाल्मीकि रामायण को माना जा सकता है। बाद में महाभारत के रामोपाख्यान में ही यही रामकथा वर्णित की गई। संस्कृत के कुछ अन्य ग्रन्थों में भी 'राम' विषयक आख्यान उपलब्ध होते हैं, जैसे- अगस्त्य संहिता, राघवीय संहिता, रामरहस्योपनिषद् आध्यात्म रामायण, आनन्द रामायण ।

अवधी एवं ब्रजभाषा का प्रयोग

इस काव्य धारा की प्रमुख विशेषत यह भी है इसमें अवधी और ब्रज दोनों ही भाषाओं का प्रयोग किया गया है। तुलसीदास ने अपने प्रसिद्ध 'ग्रन्थ - रामचरितमानस' की रचना अवधी भाषा में की है। इसके अतिरिक्त इन्होंने विनय - पत्रिका, कवितावली, गीतावाली आदि की रचना के लिए ब्रजभाषा को अपनाया है ।

राम भक्ति काव्य के प्रमुख कवि

भक्तिकालीन हिन्दी सगुण भक्ति काव्य के अन्तर्गत राम भक्ति काव्य के प्रर्वतक तुलसीदास जी हैं। राम भक्ति की प्रतिष्ठा रामानन्द द्वारा हुई। रामानन्द की भक्ति और विचारधारा से तुलसीदास प्रभावित थे।

राम भक्ति काव्य विकास में कई कवियों ने अपना योगदान दिया है उनमें प्रमुख हैं— अग्रदास, ईश्वरदास, तुलसीदास, जन जसवन्त, नाभादास, केशवदास एवं प्राणचन्द्र चौहान आदि हैं।

स्वामीरामानन्द

स्वामी रामानन्द का जन्म 1400 ई. माना गया है। इनका जन्म काशी में हुआ था और इन्होंने वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्य राघवानन्द से दीक्षा ग्रहण की थी।

स्वामी अग्रदास

स्वामी रामानन्द की शिष्य परम्परा के राम भक्त कवि स्वामी अग्रदास थे। इन्होंने कृष्णदास पयाहरी से दीक्षा लेकर शिष्यत्व प्राप्त किया था। इन्हीं अग्रदास के शिष्य भक्ति काल के रचयिता नाभादास जी थे। 'कृष्णदास पयहारी' ने जयपुर के समीप गलता नामक स्थान में अपनी गद्दी स्थापित की थी । अग्रदासजी गलता गद्दी पर 1566 ई. में विद्यमान थे।

इनके प्रमुख ग्रन्थ- 'ध्यान मंजरी, अष्टयाम, हितोपदेश उपखाणाँ बांवनी, रामभजन मंजरी, उपासना - बावनी, कुण्डलिया आदि हैं। इनकी पद रचना पढ़ने पर पता चलता है कि, इन्हें शास्त्रीय साहित्य का ज्ञान था।

कुण्डल ललित कपोल जुगल अस परम सुदेसा ।
तिनको निरखि प्रकाश लजत राकेस दिनेसा ।
मेचक कुटिल विसाल सरोरूह नैन सहाए।
मुख पंकज के निकट मनो अलि छौना आए।।

" पहरे राम तुम्हारे सोवत । मै मतिमन्द अन्ध नहिं जोवत ॥
अपमारग मारग महिजान्यो । इन्द्री पोषि पुरुषाथ मान्यो ॥
औरनि के बल अनंत प्रकार । अग्रदास के रामअधार ॥